UP Board Class 7 History Notes Chapter 13 मराठा राज्य का उदय एवं भारत में युरोपियों का आगमन

शिवाजी (1674-168 ई00)

शिवाजी महाराज योद्धा राजा थे और अपनी बहादुरी, रणनीति और प्रशासनिक कौशल के लिए प्रसिद्ध थे. उन्होंने हमेशा स्वराज्य और मराठा विरासत पर ध्यान केंद्रित किया था.
शिवाजी महाराज, शाहजी भोंसले और जीजा बाई के पुत्र थे. उन्हें पूना में उनकी माँ और काबिल ब्राहमण दादाजी कोंडा-देव की देखरेख में पाला गया जिन्होंने उन्हें एक विशेषज्ञ सैनिक और एक कुशल प्रशासक बनाया था.
शिवाजी महाराज, गुरु रामदास से धार्मिक रूप से प्रभावित थे, जिन्होंने उन्हें अपनी मातृभूमि पर गर्व करना सिखाया था.
17वीं शताब्दी की शुरुआत में नए योद्धा वर्ग मराठों का उदय हुआ, जब पूना जिले के भोंसले परिवार को सैन्य के साथ-साथ अहमदनगर साम्राज्य का राजनीतिक लाभ मिला था. भोंसले ने अपनी सेनाओं में बड़ी संख्या में मराठा सरदारों और सैनिकों की भर्ती की थी जिसके कारण उनकी सेना में बहुत अच्छे लड़ाके सैनिक हो गये थे. यह मराठाओं के सरदार के रूप में शिवाजी द्वारा कब्जा किया गया पहला किला था. उन्होंने यह जीत महज 16 साल की उम्र में हासिल कर वीरता और दृढ़ संकल्प से अपने शासन की नींव रखी.
टोरणा की विजय ने शिवाजी को रायगढ़ और प्रतापगढ़ फतह करने के लिए प्रेरित किया और इन विजयों के कारण बीजापुर के सुल्तान को चिंता हो रही थी कि अगला नंबर उसके किले का हो सकता है और उसने शिवाजी के पिता शाहजी को जेल में डाल दिया था.

18वीं शताब्दी में भारत की आर्थिक स्थिति

18वीं शताब्दी का भारतीय समाज आर्थिक दृष्टि से विषमताओं से भरा हुआ था। समाज में जहां तक और अमीर वर्ग विलासितापूर्ण जीवन व्यतीत कर रहा था तो दूसरी उन्हें निर्धन किसान, कास्तकार, मजदूर आदि जनसाधारण लोगों द्वारा पूरे वर्ष कठोर परिश्रम करने के बावजूद उन्हें अपना तथा अपने परिवार का पालन-पोषण करने में भी कठिनाइयाँ महसूस हो रही थी। समाज में सामन्तों का बोलबाला था, इसलिए उनके पास जीवन की सभी ऐश-आराम एवं विलास की वस्तुएँ उपलब्ध थी। कृषक अत्यंत गरीबी का जीवन व्यतीत कर रहे थे। बढ़ते हुए करों की माँग, अधिकारियों के अत्याचारों, जमींदारों एवं भूमि ठेकेदारों के आर्थिक शोषण ने जनसाधारण लागों के जीवन को और अधिक कष्टपूर्ण बना दिया था। नादिरशाह तथा अहमदशाह अब्दाली के आक्रमणों ने तो भारत की आर्थिक स्थिति ही बिगाड़ कर रख दी थी। इन आक्रमणों के परिणामस्वरूप अनेक बड़े-बड़े उन्नत एवं औद्योगिक नगर नष्ट हो गए। इसके अतिरिक्त जाटों, सिक्खों आदि के विद्रोह से भी भारत की अर्थव्यवस्था को बहुत नुकसान पहुँचा।

पानीपत की तीसरी लड़ाई (1761 ईस्वी)

पानीपत का तीसरा युद्ध अहमद शाह अब्दाली और मराठों के बीच लड़ा गया था और इस युद्ध में मराठों को पराजय का सामना करना पड़ा था। 14 जनवरी, 1761 ईस्वी को पानीपत का तीसरा युद्ध हुआ। इसमें अब्दाली की सेना मराठा सेना से बड़ी थी। युद्ध में मराठे पराजय हुए और उन्हें अपने अनेक योग्य सरदार व सैनिक खोने पड़े।

पानीपत के तीसरे युद्ध के कारण

मराठों ने कश्मीर, मुल्तान और पंजाब जैसे क्षेत्रों पर भी आक्रमण किया। यहाँ अहमद शाह अब्दाली के सूबेदार शासन कर रहे थे। अतः इससे अहमद शाह अब्दाली को प्रत्यक्ष चुनौती मिली। अतः अब्दाली ने पंजाब पर आक्रमण कर पुनः अधिकार कर लिया। आगे बढ़कर अब्दाली ने दिल्ली पर भी अधिकार कर लिया और मराठों को चुनौती दी।

पानीपत के तीसरे युद्ध के परिणाम

मराठों की उत्तर भारत में प्रगति अवरुद्ध हुई और उनका अखिल भारतीय मराठा साम्राज्य का सपना खंडित हुआ।
अनेक योग्य और बहादुर मराठा सरदार और सैनिक मारे गए।
मराठों की कमजोरी उजागर हुई और औपनिवेशिक शासन का मार्ग प्रशस्त हुआ।

https://www.evidyarthi.in/